बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता – एक अध्ययन

घीसालाल लोधा* और डॉ. अनिता कोठारी**

सारांश

प्रस्तुत शोध स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। राजस्थान प्रांत के एक गांव पर आधारित यह शोध बालिका शिक्षा के प्रति ग्रामीण अंचल के लोगों की जागरूकता पर प्रकाश डालता है। महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों में बालिका शिक्षा के प्रति ज्यादा जागरूकता पाई गई। ज्यादातर लोग बालिकाओं को विद्यालय भेजने में अभी भी झिझक महसूस करते हैं और उनकी कम उम्र में ही शादी के इच्छुक रहते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा हर मनुष्य के लिए अत्यन्त अनिवार्य घटक है। शिक्षाहीन मानव को पशु की श्रेणी में रखा गया है। (साक्षात्पुच्छविषाणहीनःपशु।) शिक्षा के विकास की जब बात करते हैं, तो कई ऐसे क्षेत्र दृष्टिगत होते हैं, जो शिक्षा को उस क्षेत्र में असफल साबित करते हैं। यथा – मूल्यपरक–शिक्षा, महिला–शक्तिकरण, बालिका–शिक्षा एवं जीवन–कौशल जैसे अन्य क्षेत्र। वैदिककाल में नारी–शिक्षा अथवा बालिका–शिक्षा की विशेष व्यवस्था थी लेकिन कुछ शताब्दियों पश्चात् हमारे देश में नारी–शिक्षा अथवा बालिका–शिक्षा की स्थिति अत्यन्त दयनीय रही। स्त्री को परदे के पीछे रखा जाने लगा। लड़की को समाज में बोझ समझा जाने लगा। स्त्री को विलासिता की वस्तु समझा जाने लगा। उस पर अनेक तरह से अत्याचार किए जाने लगे।

हाय अबला नारी ! तेरी यही कहानी जीवन भरआँखों में पानी।।

कई जगह पर स्थिति अब भी अच्छी नहीं है। आज भी लड़के और लड़की में भेद किया जाता है। लड़के के जन्म पर मिठाईयाँ बाँटी जाती है और लड़की के जन्म पर मातम। आखिर क्यूँ ?

किसी की कौख से मीरा दीवानी जन्म लेती है।
सीता–राधिका जैसी कहानी जन्म लेती है।
अरे दुनिया की माताओं ! मिटाओ ना गर्भ से बेटी,
तुम्हारी कौख से झाँसी की रानी जन्म लेती है।
द्वारा– कवयित्री प्रतीभा शुक्ला

इक्कीसवीं सदी का युग है। समय तेजी से बदल रहा है। आज हमारे देश में महिलाएँ भी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही है। महिला/बालिका–उत्थान हेतु केन्द्र/राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएँ संचालित की जा रही है। जिनके माध्यम से बालिका–शिक्षा की निःशुल्क व्यवस्था की गई है।

लोगों में जागरुकता लाने के लिए स्वयं–सेवी संस्थाएँ भी काम कर रही है। महिलाओं की राष्ट्र–निर्माण में भूमिका बढ़ाने हेतु उनके लिए विशेष आरक्षण की व्यवस्था की गई है। महिलाओं को पुरुष के समक्ष दर्जा दिया जा चुका है। अतः –

जिस देश में हो नर–नारी का साथ।
उस देश के भविष्य की क्या बात ?

उद्देश्य

1. बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता का पता लगाना।
2. प्राथमिक, उच्च–प्राथमिक, एवं माध्यमिक विद्यालयों में न्यूनतम नामांकन की समस्या का पता लगाना।
3. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरूषों की जागरुकता का पता लगाना।
4. बालिका–शिक्षा के प्रति महिलाओं की जागरुकता का पता लगाना।
5. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरूष व महिलाओं की जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. बालिका–शिक्षा को अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु अपेक्षित सुझाव देना।

*शोधार्थी, जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) उदयपुर (राजस्थान)
**सहायक आचार्य, लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, सी.टी.ई., उदयपुर (राजस्थान)

समस्या–कथन

बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता – एक अध्ययन

शोध–औचित्य

बालिका साक्षरता के प्रतिशत का ग्राफ बढ़ाना वर्तमान समय में भी एक चुनौती है। गराबी एवं गराबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले निम्न एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के लड़कियों की पढ़ाई प्राथमिक या उच्च प्राथमिक स्तर तक आते–आते अक्सर छुड़ा दी जाती है। अपवाद–स्वरूप ही कुछ लड़कियाँ माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं महाविद्यलय स्तर पर शिक्षा ले पाती है। कई राज्यों में स्थिति आज भी बेहद खराब है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस समस्या को अध्ययन के लिए चुना गया।

सर्वेक्षण का औचित्य

इस विधि में मुख्य आधार शोध–उपकरण होते हैं तथा स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है। उपकरणों को अधिक उपयोगी एवं सार्थक रूप में निर्मित करने हेतु एवं वांछित सूचनाओं को आसानी से उपलब्धि हेतु यह विधि उपयुक्त है।

शोध–अध्ययन विधि

इस शोध–कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध–उपकरण

शोध–कार्य को पूर्ण करने के लिए अनुसंधानकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का उपयोग किया गया है।

प्रश्नावली–निर्माण क्षेत्र

1. शैक्षिक 2. सामाजिक 3. पारिवारिक 4. आर्थिक।

शोध–न्यादर्श

इस सर्वे कार्य को करने के लिए न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। जिसमें लावासल ग्राम के 100 पुरूष और महिलाओं को शामिल किया गया है।

100(न्यादर्श)

50(महिला) 50(पुरूष)

शोध–सांख्यिकी

इस अध्ययन में प्रतिशत सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

समस्या का सीमांकन

सर्वेक्षण कार्य के समय, साधनों की उपलब्धता एवं परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए समस्या का परिसीमन करना आवश्यक है। इस अध्ययन में राजस्थान के झालावाड़ जिले के लावासल ग्राम की जनसंख्या को ही शामिल किया गया है।

प्रदत्त–विश्लेषण

उद्देश्य : –1. बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता का पता लगाना।

बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता का क्षेत्रवार अध्ययन व निष्कर्ष निम्न इस प्रकार रहा –

शैक्षिक क्षेत्र में – 74.8 प्रतिशत सहमत 25.2 प्रतिशत असहमत।

सामाजिक क्षेत्र में – 70.00 प्रतिशत सहमत 30.00 प्रतिशत असहमत।

पारिवारिक क्षेत्र में – 58.4 प्रतिशत सहमत 41.6 प्रतिशत असहमत।

आर्थिक क्षेत्र में – 64.4 प्रतिशत सहमत 37.6 प्रतिशत असहमत।

ग्राम की कुल जनसंख्या – 2670

पुरूष – 1368 2. महिला – 1302

Figure -1

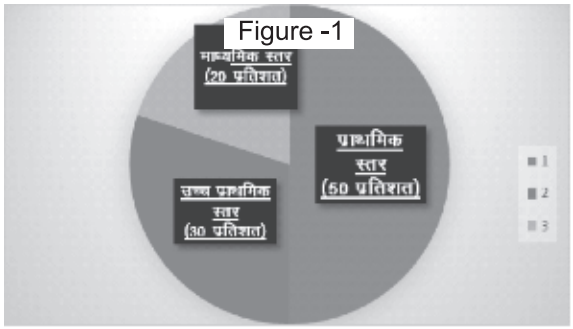

निष्कर्ष :– 1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की कुल संख्या – 197. बालिकाओं की संख्या – 95.

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत – छात्रों की कुल संख्या – 204.

बालिकाओं की संख्या – 91.

उद्देश्यः— 2. प्राथमिक, उच्च–प्राथमिक, एवं माध्यमिक विद्यालयों में न्यूनतम नामांकन की समस्या का पता लगाना।

उक्त उद्देश्य के अनुसार गाँव की कुल जनसंख्या — 2670 पाई गई जिसमें पुरूषों की कुल जनसंख्या–1368 व महिलाओं की कुल जनसंख्या–1302 विद्यार्थियों की कुल जनसंख्या — 600 जिसमें बालिकाओं की कुल जनसंख्या — 250।

1. प्राथमिक स्तर पर नामांकन — 50 प्रतिशत।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर 30 प्रतिशत।
3. माध्यमिक स्तर पर 20 प्रतिशत।

Figure -2

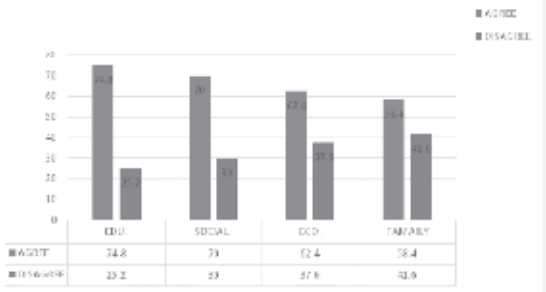

उद्देश्यः— 3. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरूषों की जागरुकता का पता लगाना।

1. बालिका–शिक्षा के प्रति महिलाओं की जागरुकता का पता लगाना।

निम्न ग्राफिक्स से यह स्पष्ट किया गया कि बालिका–शिक्षा के प्रति —

1. महिलाएँ जागरुक — 40 प्रतिशत।
2. पुरुष जागरुक — 60 प्रतिशत।

Figure -3

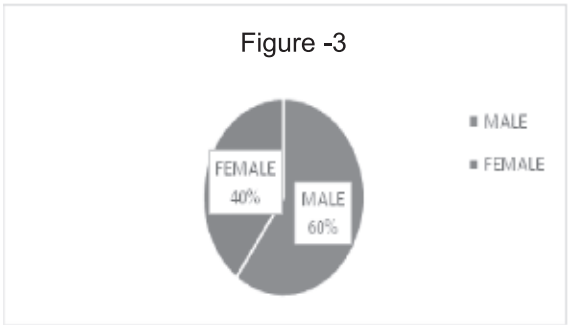

अतः — बालिका–शिक्षा के प्रति महिलाओं की अपेक्षा पुरुष अधिक जागरुक हैं।

उद्देश्यः— 5. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरूष व महिलाओं की जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निम्न ग्राफिक्स से यह स्पष्ट किया गया कि बालिका–शिक्षा के प्रति —

1. महिलाएँ जागरुक — 33.6 प्रतिशत।
2. पुरुष जागरुक — 66.4 प्रतिशत।

Figure -4

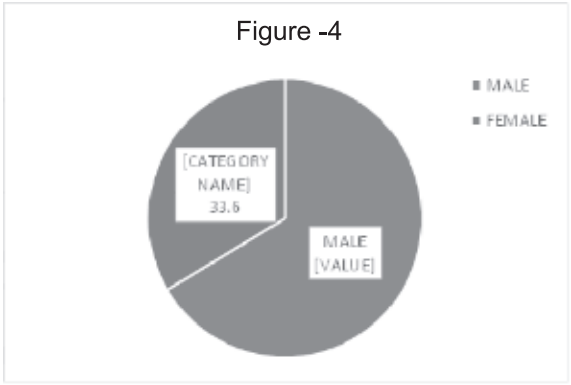

बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता अनुसंधानपरक

निष्कर्ष

बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता के सन्दर्भ में उद्देश्य् के अनुसार अनुसंधानपरक निष्कर्ष इस प्रकार रहा : —

1. लावासल ग्राम की बालिका–शिक्षा की नामांकन स्थिति प्राथमिक स्तर पर 50 प्रतिशत, उच्च–प्राथमिक स्तर पर 30 प्रतिशत एवं माध्यमिक स्तर पर जागरुकतापरक हैं।
2. लावासल ग्राम में अभिभावकों का माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं को विद्यालय भेजने का अभाव है।
3. लावसल ग्राम में बालिका–शिक्षा के उद्देश्य के अनुसार बालिका–शिक्षा के प्रति क्षेत्रवार निष्कर्ष में शैक्षिक स्तर पर 74.80 प्रतिशत सहमत व 25.20 प्रतिशत असहमत पुरुष–महिलाएँ जागरुक हैं।

(अ) लावसल ग्राम में बालिका–शिक्षा के प्रति सामाजिक क्षेत्र में 70 प्रतिशत सहमत व 30 प्रतिशत असहमत है।

(ब) बालिका–शिक्षा के प्रति आथिक क्षेत्र में 62.04 प्रतिशत सहमत व 37.06 प्रतिशत असहमत हैं।

(स) बालिका–शिक्षा के प्रति पारिवारिक क्षेत्र में 58.04 प्रतिशत सहमत व 41.6 प्रतिशत असहमत हैं।

सभी क्षेत्रों की तुलना में सबसे ज्यादा शैक्षिक स्तर पर 74.80 प्रतिशत व्यक्ति बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुक हैं। तथा सबसे कम पारिवारिक क्षेत्र में 58. 04 प्रतिशत व्यक्ति बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुक हैं।

4. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरुषों की जागरुकता 60 प्रतिशत और महिलाओं की जागरुकता 40 प्रतिशत है।
5. बालिका–शिक्षा के प्रति पुरुषों व महिलाओं की जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष निकालने पर 66.04 प्रतिशत पुरुष व 33.06 महिलाएँ जागरुक पाई गई। ग्राम में महिलाओं की अपेक्षा पुरुष–वर्ग ज्यादा जागरुक पाए गया।
   पुरुषों की तुलना में महिलाओं की बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता का अभाव पाया गया। महिलाओं में बालिकाओं को माध्यमिक स्तर पर विद्याालय भेजने में बहुत कम सक्रियता पाई गई।

बालिका–शिक्षा के प्रति शोधपरक दृष्टिकोण

1. गाँव में मात्र एक विद्यालय होने के कारण सभी बालिकाएँ उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती हैं।
2. यहाँ के लोग बालिकाओं को विद्यालय भेजने से झिझकते हैं।
3. लोगों में बालिकाओं की सुरक्षा के प्रति भय व्याप्त है।
4. अभिभावकों में शिक्षा के अरुचि होना के बालिका–शिक्षा में जागरुकता प्रति सबसे बड़ी कमी है।
5. गाँव के विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण की कमी है। शिक्षक गण शिक्षण कार्य में रुचि नहीं लेते है।
6. कई परिवारों में माता–पिता की धुम्रपान व नशे की आदत होने के कारण बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता का अत्यन्त अभाव है।
7. गाँव के लोग कन्याओं का विवाह कम उम्र में ही कर देते हैं। जिससे छात्राओं को उच्च–शिक्षा का अवसर नहीं मिल पाता है।

बालिका–शिक्षा की जागरुकता हेतु सुझाव

1. बालक–बालिका में भेदभाव समाप्त किया जाए।
2. बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक किया जाए।
3. सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के माध्यम से बालिकाओं में जाग्रति पैदा की जाए।
4. समाज में बालिका–शिक्षा को अधिकाधिक प्रोत्साहन दिया जाए।
5. सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के माध्यम से समाज को बालिका–शिक्षा के प्रति जाग्रत किया जाए।
6. बाल–विवाह रोकथाम कानून से बालिकाओं को अवगत कराया जाए।
7. बाल–विवाह की सूचना देने वाली छात्रा को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाए।
8. बाल–विवाह नही करने वाली छात्रा को उच्च शिक्षा हेतु आर्थिक सहायता दी जाए।
9. कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम कानून के प्रति जागरुक किया जाए।
10. समाज में बालिका–शिक्षा के प्रति जागरुकता लाने हेतु दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों की संख्या व गुणवत्ता में वृद्धि की जाए।
11. प्रत्येक गाँव में उच्च माध्यमिक कन्या–विद्यालय खोला जाए।
12. शिक्षण में नवाचार की उपयोगिता बढ़ाई जाए।
13. बालिकाओं की आत्मनिर्भरता हेतु रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था की जाए।
14. विद्यालय में बालिकाओं के लिए अलग शौचालय की व्यवस्था की जाए।
15. विद्यालय में केरियर निर्देशन व परामर्श की व्यवस्था की जाए।
16. विद्यालय में समय–समय पर बालिकाओं का स्वास्थ्य परीक्षण करवाया जाए।

सन्दर्भ सूची

गेरेट हेनरी – शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी प्रिंटिंग्स, बी–15,सेक्टर–8, नोयड़ा।

रुहेला सत्यपाल – सर्वेक्षण अनुसंधान और सांख्यिकी, विकास पब्लिक हाउस, आगरा।

रानी आशु – महिला विकास कार्यक्रम, इला श्री पब्लिशर्स जयपुर।

महिला एवं बाल विकास विभाग – वार्षिक प्रतिवेदन एवं प्रगति विवरण–2014–15।

महिला एवं बाल विकास विभाग – महिला अधिकारिता बाल विकास परियोजनाएँ, कार्यक्रम व गतिविधियाँ 2015।

आँगन व फुलवारी कार्यक्रम – चन्द्रभागा चैनल आकाशवाणी केन्द्र झालावाड़।